नरेश मेहता की 'संशय की एक रात' का मिथकीय अध्ययन

POONAM
Vill. Upper Bharmat, Banuri, Palampur, Kangra, Himachal Pradesh

सार संक्षेपिका

संशय की एक रात' खण्ड काव्य नरेश मेहता की मिथकीय प्रसंग से सम्बंधित रचना है। यथार्थ भावभूति और सृजनात्मक दृष्टि श्रेष्ठ साहित्य को जन्म देती है। यही वजह है कि उनकी कविता की पठनीयता निरन्तर ताजा और नया होने का अहसास देती है। 'संशय की एक रात' में आज के मनुष्य की ताजा स्थिति का वास्तविक बयान है। रचनाकार द्वारा राम का व्यक्ति रूप में प्रतिस्थापन निश्चय ही नए मूल्य की अवधारणा है। कवि की चेतन और प्रतिभा लोक दृष्टि और उसके अवतारी रूप को स्वीकार करती हुई उसे भू–पुत्र के रूप में प्रतिष्ठित करती है। 'संशय की एक रात' का कथानक चार सर्गों में विभाजित है।

बीज शब्द

नरेश मेहता, संशय की एक रात, मिथक

भूमिका

हिन्दी में 'मिथक' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने किया। 'मिथक' शब्द अंग्रेजी के 'मिथ' शब्द का पर्याय है। 'मिथ' की व्युत्पति 'माई–थोस' से हुई है। जिसका अर्थ है, पुराण कथा। आचार्य द्विवेदी ने 'मिथक' का निर्माण अंग्रेजी के 'मिथ' से 'क' प्रत्यय लगा कर किया। "अंग्रेजी में मिथ का अर्थ कोरी कल्पना है जबकि मिथक का अर्थ अलौकिकता से पूर्ण लोकानुभूति बताने वाली कथा है।";[1] मिथक एक ऐसी विचारधारा है जिससे समाज के सभी लोगों की भावना जुड़ी होती है और हमारे विचार वैषम्य को समाप्त करके एकता की सृष्टि करता है।

'संशय की एक रात' खण्ड काव्य नरेश मेहता की मिथकीय प्रसंग से सम्बंधित रचना है। यथार्थ भावभूति और सृजनात्मक दृष्टि श्रेष्ठ साहित्य को जन्म देती है। यही वजह है कि उनकी कविता की पठनीयता निरन्तर ताजा और नया होने का अहसास देती है। सुलझी हुई लोक–दृष्टि और नये मूल्यों के अन्वेषण की क्षमता यदि कविता में नहीं है तो वह सब कुछ होने के बावजूद सार्थक और समर्थ होने से चूक सकती है लेकिन नरेश मेहता की कविता समय से संवाद जिरह कुछ इस तरह करती है कि अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने में काफी कुशल दिखती है।

'संशय की एक रात' में आज के मनुष्य की ताजा स्थिति का वास्तविक बयान है। रचनाकार द्वारा राम का व्यक्ति रूप में प्रतिस्थापन निश्चय ही नए मूल्य की अवधारणा है। कवि की चेतन और प्रतिभा लोक दृष्टि और उसके अवतारी रूप को स्वीकार करती हुई उसे भू–पुत्र के रूप में प्रतिष्ठित करती है। जिसमें उसकी लोक रुचि उभर कर सामने आई। राम का युद्ध के लिए तैयार होना पर्याप्त संकेत देता है कि कवि ने व्यक्ति को खारिज करते हुए सभा को सामर्थ्य दिया है–

अब मैं निर्णय हूँ सबका अपना नहीं।

'संशय की एक रात' युद्ध की चिरन्तन समस्याओं को लेकर लिखी गई रचना है। युद्ध की समस्याओं को लेकर अन्य कवियों ने भी रचनाएं की लेकिन उन्होंने अधिकतर महाभारत के युद्ध को मिथक रूप में लिखा। नरेश मेहता ने रामायण के प्रसंग को लेकर एक चुनौती भरा मिथक स्वीकार किया। यहां राम के संशयग्रस्त मानव के रूप में प्रस्तुत कर युद्ध की विभिषिका, परिणाम, प्रभाव, पर समग्र रूप से विचार किया गया है। 'संशय की एक रात' को मनुष्य के स्वभाव में तत्व खोजने का प्रयास किया है।[2]

'संशय की एक रात' का कथानक चार सर्गों में विभाजित है। प्रथम सर्ग 'सांझ का विस्तार और बालू तट पर उदास व द्विविधाग्रस्त अवस्था में दिखलाया गया है। सेतुबन्ध के निर्माण का कार्य पूरा हो चुका है। राम के मन में युद्ध के प्रति गहन आस्था है। उनका मन रह–रह कर युद्ध का विरोध करता है और इसी कारण वह अपने को ही दोष देते हैं कि –

जानते भी क्यों वाए हम
स्वर्णमृग हित ?
क्यों गए पथ भूल ?
यह परिताप
यह अनुतान
अनुखन सालता है।[3]

लक्ष्मण राम को उनके कर्त्तव्य के प्रति विनम्र भाव से सजग करते हैं और संशय को त्यागने को कहते हैं। लक्षमण राम को विजयी होने का आश्वासन देते हैं और उनसे युद्ध में निश्चिंत होकर लड़ने का आग्रह करते हैं। लेकिन राम फिर उन्हें अपना निर्णय सुनाते हैं –

मैं कायुष्प नहीं हूँ
न युद्ध मेरी कुण्ठा है
पर में युद्ध प्रिय भी नहीं।[4]

इसी सर्ग में राम अपने वैयक्तिक निराश जीवन की अभिव्यक्ति करते हैं जिसके कारण सभी परिजनों व बंधु–बांधुबो ने दुःख भोगा, अब प्रजा को भी अपने कष्टों की आग में धकेलने का कोई अधिकार वह नहीं मानते।

युद्ध के उपरान्त होगी शांति
उपलब्धियों की सिद्धि
इस मिथ्यात्व से।
इस मरीचिका से।[5]

द्वितीय सर्ग 'वर्षा भीगे अलंकार' का आगमन में राम सिन्धु तट पर अकेले हैं। लक्ष्मण विभीषण के शिविर द्वीप चले गए हैं। राम अपने अन्तर्द्वन्द्व से पीड़ाग्रस्त है। वह इस युद्ध को किसी भी तरह रोकना चाहते हैं और वर्षा से कहते हैं कि तुम अपने देवजलों से इस संश्याग्नि को शांत करो।

राम की पीड़ा अपनी चरम सीमा पर है वह 'सत्य जो चाहते हैं, लेकिन युद्ध व खड़ग से नहीं। खड़ग के बल पर मानव रक्त पग पर आती सीता भी उन्हें नहीं चाहिए। इस तरह राम प्रश्नों से घिरे हुए हैं।

इसी बीच नील का आगमन होता है और यह राम को अदृश्य छाया के बारे में सूचना देता है, यह मोड़ देकर कवि राम को उसके अन्तर्द्वन्द्व से मुक्ति दिलाता है। छाया दशरथ व जटायु की आत्माएं हैं। दोनों राम को युद्ध करने व असत्य के विरूद्ध विरोध का उपदेश देते हैं। यहां उनके उपदेश पर अर्जुन को श्रीकृष्ण द्वारा दिये गए उपदेश से प्रभावित है। पिता की छाया राम से कहती है –

ओ विकल्पित पुत्र मेरे।
परिस्थितियां धेनु हैं,
दुहो इनको
निष्ठुर अंगुलियों से दुहो इनको।[6]

दशरथ की छाया राम को संशय से निकलने तथा असत्य के विरोध में युद्ध करने को तत्पर रहने को कहती हैं –

राम
मोह असत्य है
किसी का भी हो
तुम्हें अपनी अनास्था से नहीं
संशयी व्यक्तित्व से भी नहीं
तुम्हें लड़ना युद्ध है
असत्य से।[7]

जटायु द्वारा भी राम को कर्म करने का उपदेश दिया जाता है और राम को संशय से मुक्त करने के लिए वह हर घटना, क्षण व कार्य के पीछे विराट के महानियम का बंधन स्वीकार करते हैं और राम को अपने परिवार के लिए, राष्ट्र के लिए वह युद्ध के लिए उत्तरदायी नहीं, यह सब महाकाल के नियम का प्रतिफल है। दूसरे सर्ग में राम के अन्तर्द्वन्द्व को इन उपदेशों से शांत किया है। यह उपदेश कवि इसलिए प्रस्तुत करता है कि हर राष्ट्र अपने को सत्यपक्षी बता कर युद्ध को अपना कर्त्तव्य बताकर, निर्मोही होकर जनता का संहार करने लगता है। राम इस तरह के उपदेशों को नकारते हैं। मिथक द्वारा कवि यह प्रस्तुत करता है कि ये सब युद्ध सम्बंधी उपदेश, मात्र अपने पक्ष की स्वीकारोक्तियां हैं इसीलिए राम का संशय इनसे नहीं मिटता और वह कहते हैं '

लेकिन पितात्मा
ये सब स्वीकारोक्तियां हैं
सत्य नहीं
इनकी वास्तविकता को

कभी चुनौती ही नहीं गया
इन अंधे विश्वासों को
किसी ने निगला ही नहीं।[8]

तृतीय सर्ग 'मध्य रात्रि की मंत्रणा और निर्णय' में लक्ष्मण, हनुमान, विभीषण, सुग्रीव व जाम्वन्त आदि रामभक्तों को राम के इस संशय से परिचित कराते हैं कि राम सीता की मुक्ति को अपनी व्यक्तिगत समस्या समझते हैं और इसके लिए वह युद्ध नहीं करना चाहते यही हमारी स्वतंत्रता, और रावण के अत्याचारों से मुक्ति का भी यही मार्ग है इसलिए –

किसी भी वधु
किसी की दुहिता हो पर
हम कोटि–कोटि जनों की तो केवल
प्रतीक है –
रावण अशोक वन की सीता
हम साधारण जन की अपहृत स्वतंत्रता।[9]

अंतिम सर्ग 'संदिग्ध मन का संकल्प व सवेरा' है जिसमें राम अपने समर्पण की अन्तः पीड़ा से ग्रस्त दिखाई पड़ते हैं –

मैं अपने को सौंप दिया
ज्वारों को
विवश धरती सा सौंप दिया
अपने को सौंप दिया।[10]

इसमें कवि ने रामकथा के मूल स्वरूप को बिना बदले व्यष्टि–समष्टि का द्वन्द बड़ी गहराई से उतारा है और अभिव्यक्ति में भी कहीं शिथिलता नहीं आने दी। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नरेश मेहता की कृति संशय की एक रात में आत्म मन्थन सामूहिक दायित्व बोध, संक्रमण काल का विभाजित व्यक्तित्व बदलते युग के अनुरूप मानव मूल्यों का अन्वेषण, समूह या जनतान्त्रिकता के प्रति समर्पण मानवीय संघर्ष जिजीविषा और छन्द आदि अनेक पहलुओं पर इस कृति में गंभीर चिन्तन किया गया है। संशय की एक रात में कवि ने राम के विचार अत्यन्त सुन्दर शब्दों में अभिव्यक्त किए हैं राम लक्ष्मण से कहते हैं कि अगर युद्ध के बिना मानव एकता सम्भव नहीं हो सकती तो प्रत्येक प्रज्ञित व्यक्ति के लिए संकट उपस्थिति होगा। वह यह कि सत्य की मिथ्या पताकाएं लेकर अपने स्वार्थ के खड्ग जनता के हाथों में सौंपकर अगर युद्ध लडूंगा तो निश्चित रूप से आस्था की वंचना होगी।

नरेश जी ने 'राम' बाल्मीकि रामायण के 'राम' से नितांत भिन्न है। इनके राम आधुनिकता के संदर्भ में निर्मित समस्याओं के बारे में सोचने वाले प्रज्ञा पुरूष हैं। 'संशय की एक रात' के राम प्रज्ञा सम्पन्न व्यक्ति हैं उन्हें पिता की आत्मा समझाती है – कीर्ति, यश, नारी, धरा, जय लक्ष्मी ये सभी

कृपा से नहीं मिलते बल्कि वर्चस्व से अर्जित होते हैं। लक्ष्मण राम को सिन्धु तट पर अकेला छोड़कर हनुमान के साथ विभीषण के शिविर द्वीप की ओर चले जाते हैं। राम उद्विग्न भाव से सेतु के एक बुर्ज पर जाकर कगूरों पर बिछलती सांय–सांय करती हवा के साथ गरजते सागर को देखने लगते हैं और ये वातावरण राम के अनुत्तरित संशयों को भी उकसाता है। वे मूल्यान्वेषी है–संशय का सर्पवृक्ष पीपल या अहोरात्र हरहराता रहता है। किन्तु उनकी शान्तिवादी मानवीय इच्छा युद्ध विरोधी संकल्प की ओर बढ़ती है वे जन विनाश का कारण नहीं बनना चाहते हैं–

हाय
आज तक मैं निमित ही रहा
कुल के विनाश का
लेकिन अब नहीं बनूंगा कारण जन के विनाश का।[11]

मध्य रात्रि की मंत्रणा और निर्णय' में लक्ष्मण, विभीषण, हनुमान, सुग्रीव, जामवंत आदि सामन्तो को राम के इस संशय से परिचित कराते हैं कि राम सीता की मुक्ति को अपनी व्यक्तिगत समस्या समझते हैं और इसके लिए किसी को होम नहीं करना चाहते अर्थात् युद्ध; नहीं करना चाहते। हनुमान तर्क प्रस्तुत करते हैं कि हम यहां राम की व्यक्तिगत समस्या के लिए एकत्र नहीं हुए, हमें रावण से स्वयं को मुक्त करना है, अपने सुन्दर प्रदेश की भी हम मुक्ति चाहते हैं। यहां हमारी स्वतंत्रता, और रावण के अत्याचारों से मुक्ति का भी यही मार्ग है, इसीलिए –

रावण अशोक वन की सीता
हम साधारण जन की अपहृत स्वतंत्रता[12]

अब युद्ध राम की व्यक्तिगत समस्या नहीं रहा न ही मात्र सीता की मुक्ति के लिए किया जा रहा है। यहां हमारी स्वतंत्रता और रावण के अत्याचारों की युक्ति का यही मार्ग है। इस तरह नरेश मेहता रावण के विरूद्ध खड़े विरोध को सामूहिकता का रूप दे देते हैं। यह केवल राम का व्यक्तिगत युद्ध नहीं रहा। राम को फिर संशय है कि यह तो ठीक है रावण से मुक्ति के लिए यह युद्ध लड़ा जाएगा, क्या युद्ध से प्राप्त राज्यों में शांति स्थापित होगी ?

इस युद्ध के उपरान्त
होगी शांति
इसका तो नहीं विश्वास
बन्धु!
यह युद्ध
संभव है अनागत युद्धों को कारण बने
तब अनेकों लंका
अनेकों रावण का जन्म हो।[13]

'संशय की एक रात' में मिथक योजना प्रस्तुत करने के लिए नरेश मेहता के 'रामायण' के मुख्य पात्र राम, लक्ष्मण, हनुमान, विभीषण व दशरथ तथा जटायु की छाया को लिया है। 'संशय की एक

रात' के मुख्य पात्र राम हैं जो कवि के उद्देश्य को स्पष्ट करने की भूमिका निभाते हैं। वह आधुनिक युग के संशय ग्रस्त व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत हुए हैं। उनमें राम चरितमानस वाला ईश्वरीय तत्व नहीं वह तो निराला के राम की तरह संशयी व्यक्ति है जो इस पृथ्वी पर अन्यायपूर्ण वातावरण में नियति के हाथों का खिलौना है, जिसे एक शक्तिशाली राजा रावण के अत्याचारों के विरूद्ध विवश हो अनिच्छा से युद्ध करने पर मजबूर होना पड़ता है। यद्यपि राम नहीं चाहते कि जन संहार हो, क्योंकि अगर अन्याय को केवल युद्ध से ही जीता गया तो यह एक परम्परा बन जाएगी। प्रत्येक अन्याय का प्रतिकार युद्ध से किया जाएगा जो कभी समाप्त न होगा। कवि राम के माध्यम से युद्ध के प्रति अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है –

मानव एकता
यदि बिना युद्धों के नहीं है सत्य
लक्ष्मण
तब एक गहरा प्रश्न
संकट
प्रत्येक प्रतिज्ञत के लिए
ऐसा युद्ध, ऐसी विजय
ऐसी प्राप्ति
सब मिथ्यात्व है
नरसंहार के व्यामोह के प्रति
वितृष्णा से भर उठा हूँ।[14]

राम के माध्यम से युद्ध के प्रति शंका व्यक्त करता है राम की चिन्ता युद्ध की विभीषिकाओं से बचकर मानवीय चेतना को अक्षुण्ण बनाये रखने की है

मैं केवल युद्ध को बचाना चाहता रहा हूँ बन्धु
मानव में श्रेष्ठ जो विराजा है
उसको ही
हां उसको ही जगाना चाहता रहा हूँ बन्धु।[15]

युद्ध और आतंक व्यक्ति की आदिम प्रवृतियां है। 'संशय की एक रात' का दूसरा मुख्य पात्र है – लक्ष्मण हैं बाल्मीकि रामायण और रामचरितमानस के लक्ष्मण की तरह, तेज तरार, शीघ्र क्रोधित होना व भातृ–सेवा से परिपूर्ण हैं। 'संशय की एक रात' में लक्ष्मण का मिथक उसी रूप में प्रकाशन में आया है। लक्ष्मण अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग है उसका यह रूप आधुनिक नागरिक का रूप है

आप रुके रामेश्वर
जाएगा लक्ष्मण ले अभियान
यदि नितान्त एकांकी भी जाना पड़ा
जाऊंगा

बंधु! जाऊंगा
सीता को लाऊंगा
अपने पुरुषार्थ से।[16]

लेकिन जब लक्ष्मण राम के युद्ध विरोधी निर्णय के वास्तविक कारण से अवगत होते हैं तो वह राम से कहते हैं –

प्रभु ! क्षमा करे मेरे इस भाव को
क्या इस प्रश्न के
क्या हम ही अंतिम मानवता है ?[17]

इतना ही नहीं लक्ष्मण के भ्रातृ सेवा का परिचय भी कवि देता है और उसके माध्यम से आधुनिक युग के शासकों को निजी सम्बंधों तक सीमित कर्त्तव्यों की ओर संकेत करता है। लक्ष्मण का कथन है –

ब्रह्म लेख को भी मैं
वाणों की ही चुनौती देता
यदि वह राम के माथे पर बनाता
चिन्ता की रेखा।[18]

इस प्रकार लक्ष्मण अपने भाई के लिए सम्पूर्ण ब्रह्म लेख को मिटाने के लिए तैयार है उसके लिए अपना निजी सम्बंध ही सर्वोपनिर है।

'संशय की एक रात' का तीसरा पात्र है विभीषण। विभीषण न्याय के प्रतिकार हैं। विभीषण असत्य व अन्याय के प्रतिकार के लिए युद्ध में राम का पक्ष लेता है लेकिन यह भी राम की तरह संशय ग्रस्त है। विभीषण के संशय को कारण यह है कि आगे आने वाली पीढ़िया उसे देशद्रोही कहेंगी। जब यह दोष विभीषण पर थोपे जाएंगे उस समय इनका विरोध करने वाला कोई नहीं होगा, इसीलिए विभीषण कहता है –

तब
हमें क्या कहकर पुकारा जाएगा ? कि
राष्ट्र संकट के समय
मैं आक्रमण के साथ था
राज्य पाने के लिए
मैं उस समय इस मिथ्यात्व को झुठलाने के लिए
मेरा द्वन्द्व
संशय तर्क
राघव
उस वृद्ध ठंडी शिला जैसे
इतिहास के सम्मुख कुछ भी नहीं होगा।[19]

अंत में विभीषण स्वयं को इसी संशय से मुक्त कर लेते हैं और युद्ध को एक दर्शन स्वीकार कर उसकी अनिवार्यता पर बल देते हैं कि 'स्वत्व और अधिकार' के लिए युद्ध अन्तिम मार्ग है। विभीषण

संशय को वैयक्तिक अंधता कह कर उससे अच्छा काम की सामूहिक अंधता को अपनाना श्रेष्ठकर समझते हैं –

अब संसार के सामने यह एक भयंकर समस्या थी कि इन पाश्विक युद्धों का अन्त किस प्रकार होगा ? क्या इन पर कभी नियंत्रण हो पाएगा ? वह दिन कब आएगा जब साधारण जनता को राष्ट्र के नाम पर युद्ध की अग्नि में नहीं झौंका जाएगा बल्कि शांति व मानवतावादी ढंग से सभी राष्ट्र अपनी समस्याओं का समाधान करा करेंगे। इसी समस्या को लेकर कवि का हृदय चीत्कार कर उठा। उसने अपनी इस अनुभूति को रामायण के राम के मिथक में अभिव्यक्ति दी। रामायण के राम भी युद्ध नहीं करना चाहते इसीलिए तो वह रावण के पास बार–बार सन्धि प्रस्ताव भेजते हैं लेकिन रावण के न मानन पर ही अन्त में उन्हें युद्ध की तैयारी करनी पड़ती है। इसी तरह नरेश मेहता के राम भी युद्ध नहीं करना चाहते लेकिन वह तुलसी के राम की तरह ईश्वर नहीं, साधारण मानव और प्रज्ञावान व्यक्ति है जो युद्ध के भावी परिणामों से परिचित है, इसलिए इस संहार के लिए तैयार नहीं है और उसका कोई शांतिमय विकल्प ढूंढना चाहिए जो उन्होंने राम के मिथक में अभिव्यक्त किया है कि आज के राष्ट्रों को 'सत्य खड्ग से नहीं मानवता से स्थापित' करना चाहिए। अन्त में हम कह सकते हैं कि रामकथा के मूल स्वरूप को बिना बदले व्यष्ठि समष्टि का द्वन्द्व बड़ी गहराई से उतारा है और अभिव्यक्ति में भी कहीं शिथिलता नहीं आने दी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 उषापुरी विद्या वाचस्पति, मिथक उद्‌भव और विकास तथा हिन्दी साहित्य, पृ0 1
2 नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ0 88
3 नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ0, 6
4 नरेश मेहता, पृ0, 19
5 नरेश मेहता पृ0 24
6 नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ0, 46
7 नरेश मेहता, संशय की एक रात पृ0, 47
8 नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ0, 84
9 नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ0, 64
10 नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ0, 83
11 नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ0, 32
12 नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ0, 64
13 नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ0, 66
14 नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ0, 24
15 नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ0, 19
16 नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ0, 18
17 नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ0, 11
18 नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ0, 18
19 नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ0, 75